01

(कोई दीवाना कहता है कोई)

परे जो नाम रूपों से, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !
समाया है जो सब जग में, वही में हूँ वही में हूँ !
बसे जो सबकी धड़कन में, कलियों और फूलों में ,
बसा उपवन की खुसबू में, वही मैं हूँ वही मैं हूँ !परे जो नाम ....

भटकता दर बदर फिरता, मंदिर अर शिवालों में !
खाक छाने कभी वन में, कभी तीरथ कमाने में !
थककर हार बैठा तो, मिला अपने ही अंतर में !
जहाँ मिट जाये सब चाहत, वही मैं हूँ ! वही मैं हूँ ! परे जो ....

मिलता था सुख दुःख में, जैसे दूध पानी में !
खोजता एक झलक सुख की, मिली नहीं जन्म जन्मों में !
गुरु ने सुख जो दिखलाया, छुटी विषयों की सब आशा,
समंदर है जो अमृत का, वही मैं हूँ वही मैं हूँ ! परे जो नाम ....

डूबा किस अमी में मैं, ये बता नहीं सकता !
गुड का स्वाद ज्यों गूंगा, कभी समझा नहीं सकता !
ये है खुद की ही अनुभूति , कोई विरला समझता है !
परे जो बंध मुक्ति से, वही मैं हूँ वही मैं हूँ ! परे जो नाम ....